प्रकाशनार्थ

पटना, 1 जुलाई: यदि हमें इस दुनिया को मौजूदा पर्यावरणीय संकटों से बचाना है, तो हमारी सरकार को चाहिए कि वह शहरों के मोहल्लों और ग्रामीण क्षेत्रों में "हरित क्षेत्र" (ग्रीन ज़ोन) बनाने की दिशा में प्रयास करे। इसके लिए प्रेरणा टारुमित्रा या "वृक्षों के मित्र" जैसे जैव-विविधता से भरपूर संरक्षित क्षेत्र से ली जा सकती है, जो पटना जैसे हीट-स्ट्रेस से जूझते कंक्रीट के जंगल में एक शीतल आश्रयस्थल के रूप में स्थित है। यह सुझाव आज वन महोत्सव के अवसर पर एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) के अंतर्गत संचालित सेंटर फॉर स्टडीज़ ऑन एनवायरनमेंट एंड क्लाइमेट (CSEC) की EIACP समन्वयक डॉ. मौसमी गुप्ता और अनुसंधान प्रमुख एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुनील कुमार गुप्ता द्वारा दिया गया।

तरुमित्रा द्वारा किए जा रहे कार्यों की तरह, ऐसे हरित क्षेत्र वर्षा जल संचयन (rainwater harvesting), ग्रीन बिल्डिंग का निर्माण, औषधीय पौधों की खेती, सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा से ऊर्जा उत्पादन जैसी सतत विकास की प्रथाओं को बढ़ावा दे सकते हैं। ये पहलें वायु और जल प्रदूषण को कम करने में सहायक होंगी साथ ही किफायती आवास और सतत रोजगार के अवसर भी प्रदान करेंगी। इससे सभी नागरिकों के बीच एक स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा मिलेगा।

इस अवसर पर आद्री और तरुमित्रा के बीच भविष्य के सहयोग के लिए एक MoU पर हस्ताक्षर भी किए गए। तरुमित्रा की ओर से फादर टोनी पेंडनाथ, एस.जे. और आद्री की ओर से डॉ. मौसमी गुप्ता ने इस MoU पर हस्ताक्षर किये । कार्यक्रम के दौरान एक चित्रकला प्रतियोगिता, तरुमित्रा परिसर का भ्रमण, "मिशन लाइफ" डॉक्यूमेंट्री और औषधीय पौधों के बारे में बच्चों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर आद्री से सुश्री पूजा कुमारी, गुलशन पटेल, मौसम बहार और संजीव कुमार तथा तरुमित्रा से सुश्री देवो प्रिया दत्ता और फादर रॉबर्ट उपस्थित थे।

(अभिषेक प्रसाद)